अध्याय 9

वाचा पुनः स्थापित की गई (भाग 1)

नहेम्याह 8 में व्यवस्था के पठन ने अगले दो अध्यायों में सूचित की गई वाचा के पुनः स्थापन में अगुवाई दी। "मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी" (8:1) अर्थात पंचग्रन्थ ने यहूदियों को उस वाचा का स्मरण दिलाया जो इस्राएल ने मिस्र से अपने छुटकारे के बाद परमेश्वर के साथ स्थापित की थी। उनके पूर्वजों के समान, उस वाचा को बनाए रखने में वे असफल रहे थे। पढ़ी गई व्यवस्था को सुनने के परिणामस्वरूप उन्होंने परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को फिर से नया करने के द्वारा, प्रभु के साथ अपने सम्बन्ध को फिर से जीवित करने का दृढ़ संकल्प लिया। इसके लिए आवश्यकता थी कि लोग अपने पापों के लिए पश्चात्ताप करें। अध्याय 9 बताता है कि उन्होंने व्यवस्था के पढ़े जाने को (फिर से) सुना, अपने पापों के लिए पश्चात्ताप किया, स्वयं के साथ परमेश्वर के अनुग्रहकारी व्यवहार के इतिहास का अवलोकन किया, परमेश्वर से दया की माँग की और फिर परमेश्वर के साथ अपनी वाचा की सहमति स्थापित - अथवा पुनः स्थापित - की।

तैयारी: व्यवस्था को पढ़ना और अपने पापों के लिए पश्चात्ताप करना (9:1-5)

**1फिर उसी महीने के चौबीसवें दिन को इस्राएली उपवास का टाट पहिने
और सिर पर धूल डाले हुए, इकट्ठे हो गए। 2तब इस्राएल के वंश के लोग सब
अन्यजाति लोगों से अलग हो गए, और खड़े होकर, अपने अपने पापों और अपने
पुरखाओं के अधर्म के कामों को मान लिया। 3तब उन्होंने अपने अपने स्थान पर
खड़े होकर दिन के एक पहर तक अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक
पढ़ते, और एक और पहर अपने पापों को मानते, और अपने परमेश्वर यहोवा
को दण्डवत् करते रहे। 4येशू, बानी, कदमीएल, शबन्याह, बुन्नी, शेरेब्याह, बानी
और कनानी ने लेवियों की सीढ़ी पर खड़े होकर ऊँचे स्वर से अपने परमेश्वर
यहोवा की दोहाई दी। 5फिर येशू, कदमीएल, बानी, हशब्नयाह, शेरेब्याह,
होदिय्याह, शबन्याह, और पतह्याह नामक लेवियों ने कहा, "खड़े हो, अपने**

परमेश्वर यहोवा को अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य कहो। तेरा महिमायुक्त नाम धन्य कहा जाए, जो सब धन्यवाद और स्तुति से परे है।"

अध्याय 8 में बताया गया झोंपड़ियों का पर्व मनाने के तुरन्त बाद यहूदी फ़िर से एकत्रित हुए जिससे व्यवस्था का पढ़ा जाना सुन सकें। इस बार वे पश्चात्तापी लोगों के समान आए जो अपने पापों के लिए दुख से भरे हुए थे।

आयत 1. इस अध्याय की घटनाएँ (इसी) **महीने के चौबीसवें दिन को** पिछले अध्याय की घटनाओं के समान घटी। यह "सातवाँ महीना" (8:2) था जो "तिशरी" (सितम्बर-अक्टूबर) के रूप में भी जाना जाता था। इसी महीने के बाइसवें दिन को झोंपड़ियों का पर्व समाप्त हुआ (देखें लैव्य. 23:39-44) और दो दिन बाद सभा का आयोजन हुआ।

इसी महीने में आरम्भ में जैसे यहूदी पर्व मनाते हुए आए थे उस प्रकार नहीं परन्तु **उपवास** करते हुए वे एक साथ आए (8:9-12)। वे **टाट** पहिने हुए थे और सिर पर **धूल** डाले हुए थे।[1] शोक करने की ये गतिविधियाँ यहूदियों के पछतावे के साक्ष्य थीं। पिछली बार जब उन्होंने अपने अपराधों के लिए विलाप किया तब उनसे कहा गया कि वे ऐसा नहीं करें परन्तु आनन्द मनाएँ। इसके स्थान पर, इस बार उनके लिए उचित था कि वे अपने पापों के लिए विलाप करें और पछताएँ।

इस समय शोक करना सही क्यों था जबकि पिछली बार ऐसा नहीं किया गया? उस समय नहेम्याह ने लोगों से क्यों कहा कि वे शोक नहीं करें परन्तु वह इस समय स्वीकृति देता है कि वे शोक करें? तम्बूओं के पर्व के दिनों में शोक करना उचित क्यों नहीं था?[2] एडविन एम. यमौची ने एक रुचिकर अवलोकन किया कि हालांकि पश्चाताप का यह दिन सातवें महीने के दसवें दिन को नहीं था जब प्रायश्चित का दिन आयोजित किया गया फिर भी यह "प्रायश्चित के दिन की आत्मा" के सदृश था।[3]

आयत 2. आगे क्या किया गया इसके बारे में एक प्रकार का सारांश आगे दिया गया है। **इस्राएल के वंश के लोग**[4] सबसे पहले **सब अन्यजाति लोगों से अलग हो गए**। अन्यजाति लोगों से अलग होना इस प्रकार नहीं समझा जाए जिससे यह अर्थ निकले कि उन्होंने इस समय अपनी अन्यजाति पत्नियों को निकाल दिया, न ही उन्होंने यहूदी मत धारण करने वाले लोगों को अपनी जनसंख्या में से बहिष्कृत किया अथवा यरूशलेम में रहने वाले अन्यजाति लोगों को वहाँ से चले जाने के लिए बाध्य किया। इस सभा के दिनों में उन्होंने स्वयं को अन्यजाति लोगों से अलग किया जो उनके बीच अथवा उनके चारों ओर रहते थे। इस समय यहूदा में रहने वाले गैर इस्राएलियों से उनके सम्बन्ध रखने का कोई अर्थ नहीं था। परमेश्वर ने इस्राएल के साथ वाचा स्थापित की थी न कि किसी अन्य लोगों के साथ।

तब यहूदियों ने **खड़े होकर, अपने - अपने पापों** के साथ ही **अपने पुरखाओं के अधर्म के कामों को मान लिया**। हो सकता है कि यह देख कर अजीब लगे कि नहेम्याह के दिनों में लोग अपने पूर्वजों के पापों का पश्चात्ताप कर रहे थे परन्तु इस्राएलियों को सामूहिक अपराध के विषय में ज्ञान था जिसकी कमी आधुनिक

लोगों में देखने को मिलती है। सामूहिक पश्चात्ताप इस दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करता है कि जब इस जाति ने पाप किया तब इस जाति के अन्तर्गत सब लोग उस पाप में भागीदार हैं।[5]

आयत 3. जिस समय इस्राएली **अपने अपने स्थान पर खड़े** रहे, वे **व्यवस्था की पुस्तक पढ़ते** रहे। पढ़ने का काम किसने किया यह निश्चित नहीं है। व्याकरणिक रूप से, काम में लिया गया "उन्होंने" के अन्तर्गत लोग, "इस्राएली" हो सकते हैं परन्तु यह सर्वनाम अधिक उपयुक्तता के साथ उन लोगों की ओर संकेत करता है जिनका वर्णन अगली आयत में किया गया है।

दिन के एक पहर तक व्यवस्था का पढ़ा जाना जारी रहा। इसका अर्थ है कि लगभग तीन घण्टों तक लोग सुनते रहे जो पठन का आधा समय था जैसा पिछले अध्याय में बताया गया (देखें 8:3)। उन्होंने **एक और पहर** अर्थात तीन घण्टे, अपने पापों को मानते, और अपने **परमेश्वर** को दण्डवत् करते हुए बिताए।

आयतें 4, 5. ऊपरी तौर पर यहूदियों को उनकी आराधना में उन लेवियों के द्वारा अगुवाई दी गई जिनके नाम इन दो आयतों में बताए गए हैं। वे किस स्थान पर इकट्ठे हुए यह स्पष्ट नहीं है। NASB में **लेवियों की सीढ़ी** बताया गया है। इब्रानी शब्द מַעֲלֶה (*मा'अलेह*) को "सीढ़ियों" (KJV; NKJV; ASV; RSV; NRSV; NIV; ESV) अथवा "कदम" (NEB; REB) के रूप में भी बताया गया है। अगर यह सही है तो यह सन्दर्भ मन्दिर के एक भाग से दूसरे भाग की ओर लेकर जाने वाली सीढ़ियों को बता रहा है। कीथ एन. स्कोविल के विचार में यह सभा उपयुक्त रूप से "मन्दिर के प्रांगण" में आयोजित हुई जहाँ "सीढ़ियाँ थीं जो मन्दिर के आँगन में लेकर जाती थीं।"[6]

प्रत्येक दो आयतों में आठ लेवियों के नाम बताए गए हैं और पाँच नाम दोनों सूचियों में समान रूप से देखने को मिलते हैं। पाठ्य यह नहीं बताता कि इन दो समूहों की कार्यविधि किस प्रकार अलग अलग थी। पहले समूह ने पाप का पश्चात्ताप करने में अगुवाई दी होगी क्योंकि उन्होंने **ऊँचे स्वर से अपने परमेश्वर यहोवा की दोहाई दी**। दूसरे समूह ने आराधना में अगुवाई दी होगी क्योंकि उन्होंने लोगों से कहा कि वे **परमेश्वर** को **धन्य** कहें।

उनके इतिहास का एक पुनरावलोकन (9:6-38)

लगभग दोपहर के समय एज्रा अथवा लेवियों में से कोई एक खड़ा हुआ और सम्पूर्ण मण्डली की ओर से उसने ये शब्द कहे जो आगे देखने को मिलते हैं। LXX के आधार पर, RSV और NRSV 9:6, "और एज्रा ने कहा" के साथ आरम्भ होते हैं। हालांकि ये शब्द इब्रानी पाठ्य में देखने को नहीं मिलते फिर भी यह मानना उचित है कि अध्याय के शेष भाग में बोलने वाला वक्ता एज्रा ही था।

9:6-37 में दी गई प्रार्थना NASB और अन्य संस्करणों में काव्य रूप में छापी गई है परन्तु NRSV और NIV में यह गद्य रूप में देखने को मिलती है। इस प्रार्थना की व्याख्या काव्य रूप में की जाए या गद्य रूप में की जाए? एच. जी. एम.

विलियमसन ने यह कहते हुए समाप्ति की, “हमें चाहिए कि हम इसे, लयबद्ध पूजन पद्धति की भाषा कहते हुए सन्तुष्ट हो जाएँ और यह पहचान करें कि यह शैली और वाक्यरचना में अन्य काव्यात्मक पदों के द्वारा अधिकता के साथ प्रभावित की गयी है।”[7]

9:6-31 में हम परमेश्वर का उसके लोगों के साथ व्यवहार का एक व्यापक परन्तु घना पुनरावलोकन पाते हैं। यह भाग बाइबल में उत्पत्ति से निर्वासन पूर्व अवधि तक बताई गई कहानी की मुख्य घटनाओं को समेटता है। यह सारांश दो उद्देश्यों की पूर्ति करता है। पहला, यह 9:32-37 में दया के लिए उच्च शिखर के पश्चात्ताप और निवेदन के लिए एक स्तर तैयार करते हुए परमेश्वर की महानता और अनुग्रह पर बल देता है और मनुष्य के पापमय होने के साथ परमेश्वर की भलाई में अन्तर करता है।[8] दूसरा, यह वाचा के पुनर्नवीनीकरण के लिए ऐतिहासिक स्थापन उपलब्ध करवाने के विस्तृत उद्देश्य की पूर्ति करता है जो 9:38 में आरम्भ होता है।

सृष्टि (9:6)

6“तू ही अकेला यहोवा है; स्वर्ग वरन् सबसे ऊँचे स्वर्ग और उसके सब गण, और पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, और समुद्र और जो कुछ उसमें है, सभों को तू ही ने बनाया, और सभों की रक्षा तू ही करता है; और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दण्डवत् करती है।”

आयत 6. इस्राएल की सामूहिक प्रार्थना परमेश्वर के रूप की पहचान करते हुए आरम्भ होती है। उसके समान कुछ भी नहीं है; वह **अकेला यहोवा है**। उसकी महानता इस सच्चाई के साथ सदैव स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है कि उसने सब कुछ बनाया: **स्वर्ग** और **सबसे ऊँचे स्वर्ग** अपने **सब गण** के साथ; **पृथ्वी** और जो कुछ **उसमें है**; और **समुद्र** और जो कुछ **उसमें है**। **स्वर्ग की समस्त सेना** जो परमेश्वर **को दण्डवत् करती है यह** सम्भावित रूप से स्वर्ग के पिन्डों (सूरज, चाँद और तारे; देखें भजन 19:1-6) की ओर संकेत देती है; अधिक उपयुक्तता के साथ, यह उन दूतों की ओर संकेत देती है जो परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हैं।

अब्राहम की बुलाहट (9:7, 8)

7“हे यहोवा! तू वही परमेश्वर है, जो अब्राम को चुनकर कसदियों के ऊर नगर में से निकाल लाया, और उसका नाम अब्राहम रखा; 8और उसके मन को अपने साथ सच्चा पाकर, उससे वाचा बाँधी, कि मैं तेरे वंश को कनानियों, हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, यबूसियों, और गिर्गाशियों का देश दूँगा; और तू ने अपना वह वचन पूरा भी किया, क्योंकि तू धर्मी है।”

आयतें 7, 8. अब्राहम के विषय में यह वर्णन परमेश्वर के कार्यों पर बल देता

है। **परमेश्वर ... चुनकर कसदियों के ऊर नगर में से निकाल लाया और उसका नाम** अब्राम से **अब्राहम रखा**। तब परमेश्वर ने **उससे वाचा बाँधी**।

हालांकि उस वाचा में, जैसे उत्पत्ति में प्रस्तुत की गई, अनेक वायदे शामिल थे फिर भी यह प्रार्थना इस सच्चाई पर ध्यान केन्द्रित कर रही थी कि परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों से एक **देश** का वायदा किया था जिसमें अन्य लोग रहते थे। वह देश **कनानियों, हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, यबूसियों, और गिर्गाशियों** से भरा हुआ था।[9] देश के विषय में किया गया वायदा कहानी के अगले भाग पर प्रधानता रखता है। परमेश्वर ने उन्हें वह देश दिया; उनसे कहा गया कि वे उस देश में "प्रवेश" करें और "उस देश पर अधिकार" कर लें जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था परन्तु उन्होंने ऐसा करने से मना कर दिया और इस कारण उन्हें चालीस वर्ष तक जंगल में भटकना पड़ा (9:15-21)। अन्ततः, यरदन के पूर्वी भाग में "वे हेशबोन के राजा सीहोन" और "बाशान के राजा ओग" दोनों के देशों के अधिकारी हो गए और तब "उन्हें उस देश में पहुँचा दिया" गया जिसके लिए उसने वायदा किया था (9:22-25)।[10] इस सच्चाई के बाद में भी कि परमेश्वर ने उन्हें "लम्बा चौड़ा और उपजाऊ देश" दे दिया था, वे वर्तमान में उस समृद्ध स्थान में "दास" थे क्योंकि "उसकी उत्तम उपज उन राजा" के पास जा रही थी जो उन पर प्रभुता करते थे (9:35-37)। जिस समय से यहूदियों ने बेबीलोन की दासता से लौटना आरम्भ किया तब से शायद उनकी मुख्य चिन्ता यही थी कि उस देश पर अधिकार प्राप्त किया जाए जिसके विषय में परमेश्वर ने उनके पूर्वजों से वायदा किया था। इस अध्याय में पश्चात्ताप और प्रार्थना उस चिन्ता को प्रतिबिम्बित करती है।

यह भाग यह कहते हुए समाप्त होता है कि परमेश्वर ने **अपना वह वचन पूरा भी किया** जो उसने अब्राहम और उसके **वंश** को दिया था। उस सच्चाई का साक्ष्य यह था कि यहूदी इस समय वायदे के देश में रह रहे थे। देश का वायदा प्राथमिकता के साथ पूरा हुआ था क्योंकि परमेश्वर **धर्मी** है; अर्थात वह विश्वासयोग्य और भरोसेमन्द था।

परमेश्वर के वायदे पूरे होने का मुख्य कारण उसकी धार्मिकता थी फिर भी अब्राहम के चरित्र ने अपनी भूमिका अदा की। इस प्रार्थना ने वर्णन किया कि परमेश्वर ने अब्राहम के **मन को अपने साथ सच्चा** पाया। अब्राहम की विश्वासयोग्यता के साथ ही परमेश्वर की धार्मिकता के कारण इस्राएली देश में निवास करने लगे परन्तु इसी प्रकार बाद की पीढ़ियों की अविश्वासयोग्यता के कारण वे देश से बहिष्कृत भी किए गए। इस्राएल के इतिहास के इस पुनरावलोकन में अब्राहम एकमात्र व्यक्ति था जो "विश्वासयोग्य" (जबकि यह पद प्रमाणित रूप से मूसा और भविष्यद्वक्ताओं के बारे में नहीं कहता) कहलाया।

मिस्र से छुड़ाया जाना (9:9-12)

9"फिर तू ने मिस्र में हमारे पुरखाओं के दु:ख पर दृष्टि की; और लाल समुद्र के तट पर उनकी दोहाई सुनी। 10फ़िरौन और उसके सब कर्मचारी वरन् उसके

देश के सब लोगों को दण्ड देने के लिये चिह्न और चमत्कार दिखाए; क्योंकि तू जानता था कि वे उन से ढिठाई का व्यवहार करते हैं; और तू ने अपना ऐसा बड़ा नाम किया, जैसा आज तक वर्तमान है। [11]तू ने उनके आगे समुद्र को ऐसा दो भाग किया, कि वे समुद्र के बीच स्थल ही स्थल चलकर पार हो गए; और जो उनके पीछे पड़े थे, उनको तू ने गहिरे स्थानों में ऐसा डाल दिया, जैसा पत्थर महाजलराशि में डाला जाए। [12]फिर तू ने दिन को बादल के खम्भे में होकर और रात को आग के खम्भे में होकर उनकी अगुवाई की, कि जिस मार्ग पर उन्हें चलना था, उसमें उनको उजियाला मिले।"

आयत 9. उत्पत्ति की कहानी से निर्गमन की घटनाओं की ओर बढ़ते हुए इस प्रार्थना ने वर्णन किया कि परमेश्वर के लोगों को **मिस्र** से छुड़ाने में परमेश्वर का अनुग्रह प्रकट किया गया। इस बिन्दु पर यहूदियों के पितरों पर कोई दोष नहीं लगाया गया जबकि यह प्रार्थना उनकी विश्वासयोग्यता की भी सराहना नहीं करती। ऐसा बताया गया कि लोग सताए गए परन्तु उनके पापों का वर्णन नहीं किया गया। परमेश्वर ने मिस्र में उनके **दु:ख** पर **दृष्टि** की (निर्गमन 2:23-25; 3:7; 4:31) जब वे **लाल समुद्र** के तट पर फँस गए तब उसने **उनकी दोहाई सुनी** (निर्गमन 14:1-14) और उन्हें छुड़ाया।

आयत 10. इस्राएल को छुड़ाने में परमेश्वर ने **फ़िरौन और उसके सब कर्मचारी वरन् उसके देश के सब लोगों को दण्ड देने के लिये चिह्न और चमत्कार** दिखाए जो निःसन्देह दस महामारियों की ओर संकेत दे रहा था जो परमेश्वर ने मिस्रियों पर भेजी थीं (निर्गमन 7:1-12:36)। इन सामर्थी कार्यों के द्वारा परमेश्वर ने मिस्रियों की ढिठाई को दण्डित किया और **अपना ऐसा बड़ा नाम किया** (निर्गमन 9:16; यिर्म. 32:20) **जैसा आज तक वर्तमान है**। उसी समय से इस्राएल और जातियाँ यहोवा प्रभु, इस्राएल के परमेश्वर को ऐसे महान परमेश्वर के रूप में याद रखेंगे जिसने मिस्र को पराजित कर दिया और इस्राएल को छुड़ाया।

आयत 11. साथ ही, अपने लोगों को बचाने के लिए और मिस्र की सेना को नष्ट करने के लिए लाल सागर को दो भाग करने के द्वारा परमेश्वर ने अपना सामर्थ्य और दया प्रस्तुत की। इस्राएली कुशलपूर्वक **समुद्र के बीच स्थल ही स्थल चलकर पार हो गए** जबकि मिस्रियों को **गहिरे स्थानों में ऐसा डाल दिया** गया कि वे डूब गए (निर्गमन 14:15-15:21)।

आयत 12. परमेश्वर ने आगे अपना सामर्थ्य उस समय प्रकट किया जब उसने इस्राएलियों की जंगल में **अगुवाई** की। उसने **दिन में बादल के खम्भे** के द्वारा और **रात में आग के खम्भे** के द्वारा अगुवाई दी (निर्गमन 13:21, 22; 40:36, 37; गिनती 9:15-23)।

व्यवस्था का दिया जाना (9:13, 14)

[13]"फिर तू ने सीनै पर्वत पर उतरकर आकाश में से उनके साथ बातें कीं, और

उनको सीधे नियम, सच्ची व्यवस्था, और अच्छी विधियाँ, और आज्ञाएँ दीं। [14]उन्हें अपने पवित्र विश्राम-दिन का ज्ञान दिया, और अपने दास मूसा के द्वारा आज्ञाएँ और विधियाँ और व्यवस्था दीं।"

आयतें 13, 14. मिस्र से छुड़ा लिए जाने और लाल सागर से होकर जाने के बाद इस्राएल **सीनै पर्वत की** ओर बढ़ा (निर्गमन 19:1, 2)। वहाँ लगभग चालीस दिनों के बाद परमेश्वर ने उन्हें मूसा की व्यवस्था दी।[11] व्यवस्था दिए जाने से पूर्व वाचा स्थापित की गई (जिसका विवरण निर्गमन 19 में दिया गया है परन्तु जिसके बारे में नहेम्याह में सीधे रूप से संकेत नहीं दिया गया) और परमेश्वर ने स्वयं को प्रकट किया। वह अपने लोगों को "बादल" में, "बादल गरजने और बिजली चमकने" में, "आग" और "धूएँ" में, "नरसिंगे के बड़े भारी शब्द" में और भूकम्प में दिखाई दिया (निर्गमन 19:16-19)।

व्यवस्था को ऐसा बताया गया है जिसमें **सीधे नियम, सच्ची व्यवस्था, और अच्छी विधियाँ, और आज्ञाएँ** हैं। यह परमेश्वर की ओर से एक ऐसा दान था जो उसके अनुग्रह को प्रकट करता था। वाक्यांश **आज्ञाएँ और विधियाँ और व्यवस्था** सम्भावित रूप से संकेत देता है कि **मूसा** की पुस्तकों में पायी जाने वाली सम्पूर्ण व्यवस्था अर्थात पंचग्रन्थ परमेश्वर की ओर से आया।

विशेष विवरण के लिए (और यह शेष व्यवस्था का प्रतिनिधि रहे इसके लिए) **पवित्र विश्राम-दिन** के नियम को चुना गया। यह चुनाव व्यवस्था की पुस्तकों में सातवें दिन पर जो महत्व परमेश्वर ने रखा[12] और निर्वासन के बाद के समय में यहूदियों के द्वारा इस पर जो प्रभाव रखा गया उसको प्रतिबिम्बित करता है। यह प्रभाव एज्रा और नहेम्याह और बाद में सुसमाचारों के वर्णन में स्पष्टता के साथ देखा जा सकता है। जिस प्रकार यहूदी संसार भर में फ़ैल गए और जैसा अन्यजाति उनके साथ स्वयं के देश में भी मिल गए इसके द्वारा यह समझा जा सकता है कि विश्राम-दिन का पालन करना यहूदीवाद का एक अत्यन्त स्पष्ट गुण था। उस पवित्र दिन को मनाए जाने ने यहूदियों को अन्य लोगों से अलग किया।

जंगल में भटकना (9:15-21)

[15]"उनकी भूख मिटाने को आकाश से उन्हें भोजन दिया और उनकी प्यास बुझाने को चट्टान में से उनके लिये पानी निकाला, और उन्हें आज्ञा दी कि जिस देश को तुम्हें देने की मैं ने शपथ खाई है उसके अधिकारी होने को तुम उसमें जाओ। [16]"परन्तु उन्होंने और हमारे पुरखाओं ने अभिमान किया, और हठीले बने और तेरी आज्ञाएँ न मानी; [17]और आज्ञा मानने से इन्कार किया, और जो आश्चर्यकर्म तू ने उनके बीच किए थे, उनका स्मरण न किया, वरन् हठ करके यहाँ तक बलवा करनेवाले बने, कि एक प्रधान ठहराया कि अपने दासत्व की दशा में लौटें। परन्तु तू क्षमा करनेवाला अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करनेवाला, और अतिकरुणामय ईश्वर है, तू ने उनको न त्यागा। [18]वरन्

जब उन्होंने बछड़ा ढालकर कहा, 'तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है, वह यही है,' और तेरा बहुत तिरस्कार किया, [19]तब भी तू ने, जो अति दयालु है, उनको जंगल में न त्यागा; न तो दिन को अगुवाई करनेवाला बादल का खम्भा उन पर से हटा, और न रात को उजियाला देनेवाला और उनका मार्ग दिखानेवाला आग का खम्भा। [20]वरन् तू ने उन्हें समझाने के लिये अपने आत्मा को जो भला है दिया, और अपना मन्ना उन्हें खिलाना न छोड़ा, और उनकी प्यास बुझाने को पानी देता रहा। [21]चालीस वर्ष तक तू जंगल में उनका ऐसा पालन पोषण करता रहा कि उनको कुछ घटी न हुई; न तो उनके वस्त्र पुराने हुए और न उनके पाँव में सूजन हुई।"

जंगल में जो चालीस वर्ष इस्राएल ने बिताए उस समय के अनुभवों का वर्णन करने के द्वारा इस प्रार्थना ने इस्राएल के इतिहास की कहानी को जारी रखा। मनुष्य के पापमय होने के साथ परमेश्वर की भलाई और दया के बीच अन्तर करते हुए इसने एक नए तत्व का भी परिचय दिया।

9:15-21 में पाए जाने वाले, जंगल में भटकने के पुनरावलोकन को तीन खंड की लेखन शैली के द्वारा व्यवस्थित किया जा सकता है:

A1: जंगल में इस्राएल के लिए परमेश्वर की देखभाल (9:15)।
- B: परमेश्वर की निरन्तर देखभाल के साथ इस्राएल के पाप में अन्तर किया गया (9:16-19) जो दो उदाहरणों के साथ है:
  - (1) कनान में प्रवेश करने के लिए मना करना (9:16, 17);
  - (2) सोने के बछड़े को पूजना (9:18, 19)।

A2: जंगल में चालीस वर्षों तक इस्राएल की परमेश्वर के द्वारा देखभाल (9:20, 21)।

इस खंड की स्पष्ट विषय वस्तु यह है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को उनके पापमय होने के बाद भी निरन्तर प्रेम किया और उनकी देखभाल की। इस पद में पाए गए उदाहरणों के बारे में दो तथ्य रोचक हैं: पहला, वे क्रमवार नहीं हैं। इस्राएलियों के द्वारा देश में प्रवेश करने से मना करने से पूर्व सोने के बछड़े की घटना घटी थी। दूसरा, इस वर्णन में (जैसा अन्य में देखने को नहीं मिलता) प्रार्थना के अगुवे ने यह विवरण नहीं दिया कि परमेश्वर ने लोगों को दो पापों के लिए दण्ड दिया जिसकी ओर वह संकेत करता है। फिर भी बाद में यह बताते हुए कि परमेश्वर ने "उन्हें उस देश में पहुँचा दिया" जिसके विषय में उसने "उनके पूर्वजों से कहा था कि वे उस में जाकर उसके अधिकारी हो जाएँ" (9:23) यह प्रार्थना उन लोगों को परमेश्वर के क्रोधित होने और उन्हें दण्ड देने का संकेत देती है जिन्होंने प्रवेश करने से मना कर दिया था।

आयत 15. इस्राएल को मिस्री दासता से छुड़ाने में ही परमेश्वर की भलाई प्रकट नहीं होती थी परन्तु जंगल में अपने लोगों की देखभाल करने में भी यह प्रकट

होती थी। उसने निरन्तर **आकाश से उन्हें भोजन दिया** (“मन्ना”; 9:20) और **चट्टान में से उनके लिये पानी निकाला**। उसने उन्हें यह निमन्त्रण देते हुए कहा कि उस **देश में जाओ** जिसके लिए उसने अब्राहम और उसके वंश के लोगों से वायदा किया था। वचन कहता है कि परमेश्वर ने इस्राएल को वह देश **देने** की **शपथ खाई**। अनुवादित वाक्यांश “शपथ” का अक्षरशः अर्थ “अपना हाथ उठाया [יָד, *याद*],” है जैसा कोई व्यक्ति उस समय करता है जब वह शपथ लेता है।

आयत 16. परमेश्वर से आशीर्वाद पाए हुए होने के बाद भी इस्राएलियों ने परमेश्वर के विरुद्ध उसी प्रकार **अभिमान किया** (देखें 9:29) जैसा मिस्रियों ने इस्राएलियों के सम्मुख किया (9:10)। “अभिमान किया” (זיד से, *ज़िद*) का अनुवाद “ढिठाई की” (NRSV) और “हठीले बन गए” (NIV) किया गया है। एफ़. चार्ल्स फ़ेन्शम ने इस शब्द की ओर “धृष्ट बन गए” के रूप में संकेत दिया और कहा “इसका अर्थ है कि किसी अन्य व्यक्ति के पूर्ण अनादर में काम करना। अगर यह अन्य व्यक्ति प्रभु है तो उनके अपराध की गम्भीरता स्पष्टता से देखी जा सकती है।”[13] इस्राएली **हठीले बने और** [परमेश्वर की] **आज्ञाएँ न मानी**। यहाँ पर और आयत 17 में, “हठीले बन गए” का अक्षरशः अर्थ है कि उन्होंने “अपनी गर्दन टेढ़ी कर ली [עֹרֶף, *'ओरेप से*],” जैसा एक बैल उस समय करता है जब वह निर्देशित मार्ग की ओर जाना नहीं चाहता।

आयत 17. विशेष रूप में इस्राएलियों ने देश में प्रवेश करने से मना कर दिया और इसके स्थान पर उन्होंने **एक प्रधान ठहराया**[14] जो उन्हें **अपने दासत्व की दशा में** वापस ले जाए।[15] वे भूल गए कि बीते समय में परमेश्वर ने उनके लिए क्या क्या किया था। उन्हें विश्वास करना चाहिए था कि वह परमेश्वर जो इतना महान है कि उन्हें मिस्रियों के हाथों से छुड़ा सकता है और जंगल में उनकी देखभाल कर सकता है वही परमेश्वर कनानियों पर जय पाने में भी महान है - परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। हालांकि वे विश्वासघाती थे परन्तु परमेश्वर विश्वासयोग्य था।

परमेश्वर **क्षमा करनेवाला अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करनेवाला, और अतिकरुणामय ईश्वर** था और है (देखें निर्गमन 34:6)। इस कारण उनके द्वारा पाप करने के बाद भी प्रभु ने **उनको न त्यागा**। उसने इस्राएलियों को जंगल में त्यागा नहीं। उनके पापों के परिणाम निश्चित थे परन्तु परमेश्वर ने जंगल में उनके भटकने के समय उनकी देखभाल की।

आयत 18. परमेश्वर की दया का अन्य उदाहरण एक पाप के प्रति उसकी प्रतिक्रिया में देखने को मिलता है जिसे उसने देश में प्रवेश करने के लिए मना करने की तुलना में सबसे बुरा माना होगा: उनके द्वारा सोने का **बछड़ा** पूजना (निर्गमन 32:1-35)। लोगों ने धातु **ढालकर** एक चीज़ बनाई और उसे यह कहते हुए आदर दिया कि **परमेश्वर जो** [उन्हें] **मिस्र देश से छुड़ा लाया है**, उसके द्वारा उसका **बहुत तिरस्कार किया** (अक्षरशः, “एक अपमानजनक कार्य”)।

आयतें 19, 20. तब भी परमेश्वर ने **उनको जंगल में न त्यागा** जबकि ऐसा करने के लिए उसने चेतावनी दी थी (निर्गमन 32:9, 10)। उसने उनकी देखभाल निरन्तर उसी प्रकार की जैसी उनकी दौड़ के आरम्भ से की। मात्र उसने **बादल** और

आग के माध्यम से **अगुवाई नहीं** की परन्तु उसने स्वयं अलग अलग मनुष्यों को प्रेरणा दी, जिनमें एक विशेष नाम मूसा का है, जिनके द्वारा **उन्हें समझाने के लिये अपने आत्मा को** दिया। प्रत्येक दिन, उनके निर्वाह के लिए उसने **मन्ना** (रोटी) और **पानी** उपलब्ध करवाया।

आयत 21. इस्राएल के **जंगल** के अनुभव के लघु इतिहास की प्रार्थना एक सारांश के साथ समाप्त की गई कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपने लोगों की निरन्तर देखभाल की। **चालीस वर्ष तक** [वह] **जंगल में उनका ऐसा पालन पोषण करता रहा** कि उनको कुछ घटी न हुई; **न तो उनके वस्त्र पुराने हुए और न उनके पाँव में सूजन हुई** (देखें व्यव. 8:4)। यहाँ तक कि सामान्य रूप से एक लम्बी यात्रा के परिणामस्वरूप वस्त्र पुराने होने और फट जाने के चिन्ह भी इस यात्रा के अन्त के बाद भी देखने को नहीं मिले।

कनान को जीता जाना (9:22-25)

[22]"फिर तू ने राज्य राज्य और देश देश के लोगों को उनके वश में कर दिया, और दिशा दिशा में उनको बाँट दिया; यों वे हेशबोन के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग दोनों के देशों के अधिकारी हो गए। [23]फिर तू ने उनकी सन्तान को आकाश के तारों के समान बढ़ाकर उन्हें उस देश में पहुँचा दिया, जिसके विषय तू ने उनके पूर्वजों से कहा था कि वे उस में जाकर उसके अधिकारी हो जाएँगे। [24]इस प्रकार यह सन्तान जाकर उसकी अधिकारिन हो गई, और तू ने उनके द्वारा देश के निवासी कनानियों को दबाया, और राजा और देश के लोगों समेत उनको, उनके हाथ में कर दिया, कि वे उनसे जो चाहें सो करें। [25]उन्होंने गढ़वाले नगर और उपजाऊ भूमि ले ली, और सब भाँति की अच्छी वस्तुओं से भरे हुए घरों के, और खुदे हुए हौदों के, और दाख और जैतून की बारियों के, और खाने के फलवाले बहुत से वृक्षों के अधिकारी हो गए; वे उसे खा खाकर तृप्त हुए, और हृष्ट-पुष्ट हो गए, और तेरी बड़ी भलाई के कारण सुख भोगते रहे।"

आयतें 22-25. दिव्य भलाई, जो कनान की जातियों पर इस्राएल की विजय में देखने को मिलती है, यहूदा की प्रार्थना के इस भाग की विषय वस्तु है। वायदे के देश पर इस्राएल की विजय का बाइबल सम्बन्धी विवरण गिनती 21 में आरम्भ होता है, जो उनके द्वारा **हेशबोन के राजा सीहोन** और **बाशान के राजा ओग** पर विजय के विवरण के साथ है और फिर यहोशू की पुस्तक में जारी रहता है। यह **राज्य राज्य और देश देश के लोगों** पर विजय को प्रकट करता है (9:22); अब्राहम से किए गए वायदे के **देश** का अधिकारी कर देना और अब्राहम के वंश को बढ़ाना (**आकाश के तारों के समान**), जैसा प्रभु ने वायदा किया था (9:23); और **कनानियों** पर विजय (9:24)। यह **गढ़वाले नगर**, **उपजाऊ** [अक्षरशः, "चिकनी"] **भूमि, सब भाँति की अच्छी वस्तुओं से भरे हुए घरों, खुदे हुए हौदों के, और दाख**

और जैतून की बारियों के, और खाने के फलवाले बहुत से वृक्षों के साथ कनानियों की बहुतायत से भरी सम्पत्ति पर स्वयं के लिए अधिकार कर लेने को शामिल करता है (9:25; देखें व्यव. 6:10, 11)।

फिर भी यह पद इस सच्चाई की ओर संकेत देता है कि बहुतायत से भरी हुई ये आशीषें उनके लिए इसलिए थीं कि ये उनके लिए ठोकर का एक अवसर बनें जब वे **खा खाकर तृप्त हुए, और हृष्ट-पुष्ट हो गए, और** [परमेश्वर की] **बड़ी भलाई के कारण सुख भोगते रहे** (9:25)। ये शब्द व्यवस्थाविवरण 8:10-20 में मूसा की चेतावनी याद दिलाते हैं जब उसने भविष्यद्वाणी की कि कैसे, जब इस्राएलियों ने उस देश में प्रवेश किया और उसके बाद "खाकर तृप्त" हो गए तब अगर वे "परमेश्वर यहोवा को भूल" जाएँ तब यह आवश्यक था कि उन्हें दण्ड दिया जाए। वास्तव में, जब वे उस देश की आशीषों में बढ़ने के आदी हो गए तब उन्होंने परमेश्वर को भुला दिया जैसा यह प्रार्थना अंगीकार करते हुए आगे बढ़ती है।

न्यायी और राजा (9:26-31)

26"परन्तु वे तुझ से फिरकर बलवा करनेवाले बन गए और तेरी व्यवस्था को त्याग दिया, और तेरे जो नबी तेरी ओर उन्हें फेरने के लिये उनको चिताते रहे उनको उन्होंने घात किया, और तेरा बहुत तिरस्कार किया। 27इस कारण तू ने उनको उनके शत्रुओं के हाथ में कर दिया, और उन्होंने उनको संकट में डाल दिया; तौभी जब जब वे संकट में पड़कर तेरी दोहाई देते रहे तब तब तू स्वर्ग से उनकी सुनता रहा; और तू जो अतिदयालु है, इसलिये उनके छुड़ानेवाले को भेजता रहा जो उनको शत्रुओं के हाथ से छुड़ाते थे। 28परन्तु जब जब उनको चैन मिला, तब तब वे फिर तेरे सामने बुराई करते थे, इस कारण तू उनको शत्रुओं के हाथ में कर देता था, और वे उन पर प्रभुता करते थे; तौभी जब वे फिरकर तेरी दोहाई देते, तब तू स्वर्ग से उनकी सुनता और तू जो दयालु है, इसलिये बार बार उनको छुड़ाता, 29और उनको चिताता था कि उनको फिर अपनी व्यवस्था के अधीन कर दे। परन्तु वे अभिमान करते रहे और तेरी आज्ञाएँ नहीं मानते थे, और तेरे नियम, जिनको यदि मनुष्य माने, तो उनके कारण जीवित रहे, उनके विरुद्ध पाप करते, और हठ करके अपना कन्धा हटाते और न सुनते थे। 30तू तो बहुत वर्ष तक उनकी सहता रहा, और अपने आत्मा से नबियों के द्वारा उन्हें चिताता रहा, परन्तु वे कान नहीं लगाते थे, इसलिये तू ने उन्हें देश देश के लोगों के हाथ में कर दिया। 31तौभी तू ने जो अतिदयालु है, उनका अन्त नहीं कर डाला और न उनको त्याग दिया, क्योंकि तू अनुग्रहकारी और दयालु ईश्वर है।"

आयत 26. यह आयत उस विद्रोह को बताती है जो इस्राएल के कनान में प्रवेश करने के बाद किया गया। जो अच्छा देश उन्होंने परमेश्वर से प्राप्त किया था उसमें "हृष्ट-पुष्ट" होने के बाद (9:25) वे फिरकर **बलवा करनेवाले बन गए**। उन्होंने परमेश्वर की **व्यवस्था** को त्याग दिया और उसका **बहुत तिरस्कार किया।**

"तिरस्कार" अक्षरशः "अपमानजनक कार्य," है जैसा 9:18 में देखने को मिलता है। लेस्ली सी. एलन का यह था कि आयत 26 में "तिरस्कार" शब्द, "परमेश्वर के भविष्यद्वाणी के शब्द को अपमानित करने की ओर संकेत करता है,"[16] जैसा आयत 18 में देखने को नहीं मिलता। लोगों को चिताने और उन्हें फेरने के लिये जिन्हें भेजा गया उन्हें अस्वीकार करने के द्वारा लोग अपने पाप में और भी बदतर बन गए; परमेश्वर के जो **नबी** थे उन्हें भी उन्होंने मार डाला।

आयतें 27-29. इन पापों के परिणामस्वरूप परमेश्वर ने अपने लोगों को दण्ड दिया। इस अध्याय में पहली बार परमेश्वर के दण्ड का वर्णन किया गया है: उसने **उनको उनके शत्रुओं के हाथ में कर दिया**। फिर भी कहानी यहीं पर समाप्त नहीं हुई; इसके स्थान पर, यहूदियों ने प्रभु को **दोहाई** दी जो **स्वर्ग से उनकी सुनता रहा** और **उनके छुड़ानेवाले को भेजता रहा जो उनको शत्रुओं के हाथ से छुड़ाते थे**। यह कहानी बार बार दोहराई गई: इस्राएली फिर से **बुराई करते थे, शत्रुओं के हाथ में कर** दिए जाते थे, वे **फिरकर** परमेश्वर की **दोहाई देते थे** और वह **उनको छुड़ाता** था।

प्रभु **उनको चिताता था कि उनको फिर** [अपनी] **व्यवस्था के अधीन कर दे**। फिर भी लोगों ने उसकी चेतावनी को अनसुना कर दिया; **परन्तु वे अभिमान करते रहे** (देखें 9:16) और उन्होंने परमेश्वर की जीवनदायी **आज्ञाएँ** मानने से मना कर दिया। इसके स्थान पर, जैसा यह प्रार्थना अंगीकार करती है, वे **हठ करके अपना कन्धा हटाते** और उसकी न **सुनते** थे।

26 से लेकर 29 तक की आयतें ऐसी ध्वनि देती हैं जैसे वे सबसे पहले न्यायियों के समय के साथ सम्बन्ध बता रही हैं। वहाँ पर दोहराए गए चक्र का वे सटीकता से चित्रण करती हैं: इस्राएल ने पाप किया; अपने लोगों को दण्ड देने के लिए परमेश्वर ने एक अत्याचारी भेजा; उन्होंने परमेश्वर के सम्मुख दोहाई दी; तब उसने उनके अत्याचार से बचाने के लिए एक छुड़ाने वाला एक न्यायी उपलब्ध करवाया। तब फिर से वे पाप करते थे और इस प्रकार यह चक्र चलता रहता था।

आयत 30. यह पद बताता है कि किस प्रकार परमेश्वर **बहुत वर्ष तक उनकी सहता रहा** जो शायद यह सुझाता है कि राजा के समय में न्यायियों की समय अवधि के बाद इस्राएल का इतिहास, उस युग में पाए जाने वाले तरीके को निरन्तर प्रकट करता रहा। इसका अर्थ यह है कि यह उस समय तक चलता रहा जब तक अठारहवीं शताब्दी ईसा पूर्व में अश्शूरियों ने इस्राएल को पराजित नहीं कर दिया (देखें 9:32)। इस्राएल के पूर्वजों की विश्वासयोग्यता में समय के साथ सुधार नहीं आया। अब भी परमेश्वर ने उनके प्रति महान धीरज उसी प्रकार दिखाया जैसा उसने पिछले युगों में दिखाया था।

बँटे हुए राज्य के समय की अवधि में किसी एक उत्तरी राजा ने भी सच्चे परमेश्वर की सेवा करने के लिए लोगों को मूर्तिपूजा से फिराने का प्रयास नहीं किया; उन सबने सम्पूर्ण जाति को पाप करने की अगुवाई दी। दक्षिण में कुछ ही राजा परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य थे। फिर भी वह धीरज के साथ (अपने) **आत्मा से नबियों के द्वारा उन्हें चिताता रहा** कि वे पश्चात्ताप करें।

परमेश्वर के द्वारा उन्हें सहने को ध्यान में नहीं रखते हुए इस्राएली नबियों की ओर **कान नहीं लगाते थे** जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर ने उन्हें फिर से उनके शत्रुओं, जैसे कि अश्शूरियों, के **हाथ में** कर दिया।

आयत 31. यह दण्ड इस्राएल के भारी विनाश के बाद भी समाप्त नहीं हुआ। **अनुग्रहकारी और दयालु ईश्वर** होने के कारण उसने **उनका अन्त नहीं कर डाला और** न उनको **त्याग दिया**। जिस प्रकार जंगल में परमेश्वर ने लोगों के पापों के लिए उन्हें दण्ड दिया परन्तु उन्हें त्यागा नहीं। शेष रह गए लोग देश में लौट आए जैसा सुनने वालों ने देखा था।

दया के लिए निवेदन (9:32-37)

32"अब हे हमारे परमेश्वर! हे महान् पराक्रमी और भययोग्य ईश्वर! जो अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहा है, जो बड़ा कष्ट, अश्शूर के राजा के दिनों से ले आज के दिन तक हमें और हमारे राजा, हाकिमों, याजकों, नबियों, पुरखाओं वरन् तेरी समस्त प्रजा को भोगना पड़ा है, वह तेरी दृष्टि में थोड़ा न ठहरे। 33तौभी जो कुछ हम पर बीता है उसके विषय तू तो धर्मी है; तू ने तो सच्चाई से काम किया है, परन्तु हम ने दुष्टता की है। 34हमारे राजा और हाकिमों, याजकों और पुरखाओं ने न तो तेरी व्यवस्था को माना है और न तेरी आज्ञाओं और चितौनियों की ओर ध्यान दिया है, जिनसे तू ने उनको चिताया था। 35उन्होंने अपने राज्य में, और उस बड़े कल्याण के समय जो तू ने उन्हें दिया था, और इस लम्बे चौड़े और उपजाऊ देश में तेरी सेवा नहीं की; और न अपने बुरे कामों से पश्चाताप किया। 36देख, हम आज कल दास हैं; जो देश तू ने हमारे पितरों को दिया था कि उसकी उत्तम उपज खाएँ, इसी में हम दास हैं। 37इसकी उपज से उन राजा को जिन्हें तू ने हमारे पापों के कारण हमारे ऊपर ठहराया है, बहुत धन मिलता है; और वे हमारे शरीरों और हमारे पशुओं पर अपनी अपनी इच्छा के अनुसार प्रभुता जताते हैं, इसलिये हम बड़े संकट में पड़े हैं।"

अगली छह आयतों में प्रार्थना के ध्यान का केन्द्र पिछले इतिहास से वर्तमान के कष्ट की ओर फिरता है। यहूदियों ने निःसन्देह परमेश्वर की दोहाई दी कि वह उन पर ठीक उसी प्रकार दया दिखाए जैसी उसने उनके पूर्वजों पर की थी।

आयत 32. अब "वर्तमान स्थिति के लिए-बीते समय के सर्वेक्षण में परिवर्तन के निवेदन का चिन्ह प्रदान करता है।"[17] लोगों के निवेदन **परमेश्वर** के अद्‌भुत गुणों के लिए उसकी स्तुति करते हुए उसको सीधे सम्बोधित करने के द्वारा आरम्भ होते हैं। इसने उसकी पहचान **महान् पराक्रमी और भययोग्य** और अपनी **वाचा** को बनाए रखने वाले **करुणा** दिखाने वाले के रूप में की।

जब यह प्रार्थना अपनी समाप्ति की ओर बढ़ने लगी तब इसने परमेश्वर से निवेदन किया कि वह उनके उस **कष्ट** को देखे जिसका अनुभव उन्होंने - उन सबने, **राजा** से लेकर **प्रजा** तक - **अश्शूर के राजा के दिनों** से लेकर आज के दिन तक

किया था। वास्तव में जब अश्शूरियों ने उत्तरी राज्य नष्ट कर दिया और दक्षिणी राज्य पर लगभग अधिकार कर लिया उस समय से (कुछ वर्षों को छोड़) परमेश्वर के लोग अन्य लोगों के अधिकार के अन्तर्गत रहे जिस प्रकार न्यायियों के समय की अवधि में वे सताए गए।

यह देखने को मिलता है कि दया का निवेदन स्पष्ट नहीं है। इसके स्थान पर, परमेश्वर से एक नम्र निवेदन यह था कि उसके लोगों का "कष्ट" उसकी **दृष्टि में थोड़ा न ठहरे**। शायद इसके पीछे की मनसा यह थी कि प्रभु को विनम्रता से याद दिलाया जा सके कि उसने किस प्रकार पूर्व में "स्वर्ग से उनकी सुनी" जब आरम्भ की पीढ़ियों ने उसकी दोहाई दी थी (9:27)।

आयत 33. यह प्रार्थना यह स्पष्ट करने के लिए शीघ्रता करती है कि दया के लिए यहूदियों के द्वारा किया गया निवेदन उनकी अच्छाई के आधार पर नहीं है। इसके स्थान पर उन्होंने अंगीकार किया कि जितने भी "कष्टों" का अनुभव उन्होंने किया उसके वे अधिकारी हैं (9:32)। परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ सदैव **सच्चाई से काम किया**; उसने वाचा के अपने भाग को पूरा किया। समस्या यह थी कि उन्होंने अपने वायदे पूरे नहीं किए। वे वाचा के प्रति अविश्वासयोग्य रहे-और उन्होंने **दुष्टता की**। इस कारण इस जाति पर दोष लगाने के विषय में परमेश्वर **धर्मी** था। आयत 33 की भाषा के कारण इस प्रार्थना का वर्गीकरण "न्याय के स्तुतिगान के रूप में किया गया है।"[18]

आयत 34. इस प्रार्थना ने इस बात पर बल दिया कि अधिकार रखने वाले सब लोगों - **राजा, और हाकिमों**,[19] **याजकों और पुरखाओं** ने अनाज्ञाकारिता दिखाई। गलती करने वाला यह समूह 9:32 में कष्ट सहने वाले लोगों से अलग है जिसमें "लोगों" के एक सन्दर्भ को यह छोड़ देता है। इसके पीछे का अर्थ यह है कि अधिकार रखने वाले लोग प्राथमिक रूप से उस पाप के लिए ज़िम्मेदार थे जो इस जाति पर दण्ड और कष्ट लाया। 1 और 2 राजा में भी यह दृष्टिकोण प्रकट किया गया है।[20] वे परमेश्वर की **व्यवस्था** को मानने में असफल रहे जिसमें उसकी **आज्ञाओं** और **चितौनियों** की ओर ध्यान देना आवश्यक था। "चितौनियों" (עֵדוֹת, *'एदूथ*) के लिए इब्रानी शब्द का अक्षरशः अर्थ "गवाहियाँ" है और **चिताया** (עוּד, *'उद*) के पीछे के शब्द का अर्थ है "गवाही।" इस वाक्यांश का अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है "वे गवाहियाँ जिनकी गवाही तूने उनको दी।"

आयत 35. हालांकि वे परमेश्वर के **बड़े कल्याण** के द्वारा आशीषित किए गए थे, उन्हें **लम्बे चौड़े और उपजाऊ देश** में रहने की स्वीकृति दी गई फिर भी वे परमेश्वर की सेवा करने अथवा **अपने बुरे कामों** से पश्चाताप करने में असफल रहे। इस कारण वे उस दण्ड के अधिकारी हुए जो उसने उन पर भेजा।

आयतें 36, 37. अपने पापमय होने और अपनी अयोग्यता को महसूस करते हुए अब भी यहूदी परमेश्वर की दोहाई देते रहे। प्रार्थना में यह सच्चाई प्रतिबिम्बित हुई कि हालांकि वे उस **देश** में रह रहे थे जो प्रभु ने उन्हें दिया था फिर भी वे **उसकी उत्तम उपज** का आनन्द नहीं ले पाए। इसके स्थान पर वे स्वयं के देश में **दास** थे क्योंकि **इसकी उपज राजा** के लिए थी। निःसन्देह, यह प्रार्थना यहाँ पर

इस सच्चाई की ओर संकेत दे रही थी कि अपने फ़ारसी स्वामियों के भारी कर के तले यहूदी दबे हुए थे जो उन्हें (उनके **शरीरों** को) और उनके **पशुओं** को नियन्त्रित करते थे।

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि क्या इस अवसर पर यहूदियों ने स्वयं के "दास" होने के बारे में फ़ारसियों से स्पष्टता के साथ शिकायत की अथवा नहीं की जब एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकें शासन करने वाले फ़ारसी राजवंश का वर्णन करने में उचित रूप से प्रवीण रही हैं। उनकी शिकायतों के सन्दर्भ में ऐसा कहा जा सकता है: (1) जब ये शब्द बोले गए तब ये इस मनसा के साथ नहीं बोले गए कि फ़ारसी राजा उन्हें सुन सकें; और (2) अगर उसने सुन भी लिया तब भी यह प्रार्थना उसके अधिकार को धमकी नहीं देती अथवा ऐसा सुझाव नहीं देती कि यहूदी एक विद्रोह करने जा रहे हैं।

फिर से, यह अंगीकार अन्याय की शिकायत नहीं करता क्योंकि यह स्वीकार करता है कि यहूदी लोग [अपने] **पापों के कारण** राजा के अधिकार के अन्तर्गत थे। यह परमेश्वर के लिए एक इच्छा प्रकट कर रहा था कि वह उनकी परिस्थिति देखे। लोग **बड़े संकट में पड़े** थे; और उनकी प्रार्थना ने सुझाव दिया कि अगर परमेश्वर उनके संकट की पहचान कर लेता है तो वह उनके प्रति दयालु होगा और उन्हें उनकी पीड़ा से छुड़ा लेगा।

वाचा बनाए रखने के लिए एक वायदा (9:38)

[38]"इस सब के कारण, हम सच्चाई के साथ वाचा बाँधते, और लिख भी देते हैं, और हमारे हाकिम, लेवीय और याजक उस पर छाप लगाते हैं।"

परमेश्वर के साथ "एक समझौता" तैयार करने के एक दृढ़ निश्चय ने 9:6-37 में दी गई प्रार्थना का अनुसरण किया। उस "समझौते" ने सीनै पर्वत पर स्थापित की गई वाचा का नवीनीकरण और अध्याय 10 में जारी रहने वाले इसके सुधार का विवरण शामिल किया। वास्तव में, इब्रानी बाइबल में, अध्याय 10 की पहली आयत के स्थान पर 9:38 आता है।

आयत 38. यहूदियों ने विशेष अर्थ के साथ परमेश्वर की दोहाई दी कि वह उन पर दया दिखाए जिस प्रकार उसने सम्पूर्ण इतिहास से उनके पूर्वजों के लिए बार बार किया। वाक्यांश **इस सब के कारण** यहूदी जो कदम उठा पाए उसके पीछे का कारण प्रदान करता है: "इस सब" यहूदा की निरन्तर अनाज्ञाकारिता और वर्तमान में उनके "बड़े संकट" (9:37) के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और भलाई की ओर संकेत करता है। परमेश्वर के लोगों के रूप में अपने इतिहास का पुनरावलोकन करने के बाद इस पीढ़ी ने एक **वाचा बाँधते, और** उसे **लिख भी** देने का निर्णय लिया। वे वाचा को बनाए रखने के लिए प्रतिज्ञा ले रहे थे और उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा को "लिखित में" रखना चाहा जिससे वे उसके साथ बँधने के भाव पर बल दे सकें। इस **छाप** लगी हुई **वाचा** पर लोगों के **हाकिम** के नाम देखे जा

सकते थे। अध्याय 10 उन लोगों की पहचान करते हुए आगे बढ़ता है जिन्होंने इस प्रमाण पत्र पर हस्ताक्षर किए और उनकी प्रतिज्ञा में परिभाषित कर्तव्यों को सूचीबद्ध किया।

यह पहचान करना महत्वपूर्ण है कि यहूदियों ने प्रभु के साथ कोई नई वाचा तैयार नहीं की परन्तु मूल वाचा को पुनः प्रमाणित किया जो सम्पूर्ण इतिहास में प्रभाव में रही थी। निर्गमन 19 के अनुसार, इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाने के बाद परमेश्वर ने उनके साथ एक वाचा बाँधी। यह वाचा इस बात पर आधारित नहीं थी कि उन्होंने परमेश्वर के लिए क्या किया परन्तु उनके प्रति परमेश्वर के अनुग्रहकारी कार्यों पर आधारित थी। उस वाचा की शर्तें प्रायः ये थीं कि अगर वे परमेश्वर की वाणी सुनें और उसकी वाचा को बनाए रखें तो वह उन्हें आशीष देगा। लोगों ने यह कहते हुए सहमति दी, “जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे” (निर्गमन 19:8)। इस्राएल के इतिहास का शेष भाग इस वाचा के द्वारा चलाया गया। जब लोगों ने अपना वायदा पूरा किया तब वे आशीषित हुए। जब उन्होंने अनाज्ञाकारिता की (जैसा प्रायः अधिकता के साथ होता था) तब उन्होंने शाप पाए। फिर भी, जैसा यह अध्याय संकेत देता है, परमेश्वर ने उन्हें कभी छोड़ा नहीं।[21] इस वाचा को याद करते हुए और इसे बनाए रखने में स्वयं की असफलता की पहचान करते हुए, नहेम्याह के दिनों में लोग ठीक वैसा ही करने के लिए स्वयं को समर्पित कर रहे थे जैसा करने के लिए इस्राएलियों ने मूल रूप से कहा था: परमेश्वर की वाणी सुनना और उसकी आज्ञाओं को मानना।

वाचा के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए इस्राएल की प्रतिज्ञा के नवीनीकरण के साथ अध्याय समाप्त होता है। वह सच्चाई उनके इतिहास के दोहराव को पहले एक नए प्रकाश में रखती है। प्राचीन निकट पूर्व की संधि-वाचाओं और बाइबल में पायी जाने वाली वाचाओं में (देखें निर्गमन 19:4), इसमें शामिल दलों के इतिहास का वर्णन प्रदान करने के बाद तय की जाती थी।[22] इस मामले में, परमेश्वर की भलाई और दया पर दिया गया बल, जो इस्राएल की विश्वासयोग्यता के साथ अन्तर रखता है, दोनों वाचा को समझने के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि और इसे मानने के लिए यहूदा स्वयं को पुनः समर्पित करे इसकी आवश्यकता उपलब्ध करवाता है।

नहेम्याह 9 में इस्राएल के इतिहास का पुनरावलोकन उत्पत्ति से लेकर 2 राजा तक पुराने नियम की लगभग सब पुस्तकों का फैलाव प्रदान करता है। यह सुझाता है कि नहेम्याह के दिन के यहूदी उन पुस्तकों से अवगत थे और उन्हें दिव्य प्रेरक इतिहास उपलब्ध करवाने वाली पुस्तकें मानते थे। नहेम्याह की बाइबल (हालांकि इसने पुराने नियम की बाद की पुस्तकों को शामिल नहीं किया और यह इब्रानी में मसौदों पर लिखी हुई थी) हमारी बाइबल से कुछ अलग थी।

अनुप्रयोग

प्रभावी अगुवाई: लोगों को चुनौती देना (अध्याय 9)

एक अच्छा अगुवा लोगों से प्रेम करता है और उनका आदर करता है; वह उपयुक्तता के साथ "लोगों का व्यक्ति" होना चाहता है। फिर भी लोगों के प्रति उसका प्रेम उसे ऐसा नहीं बनाता कि वह उनकी गलतियों को अनदेखा कर दे, लापरवाह कार्यों को क्षमा कर दे अथवा आलस को या बुरे चलन को स्वीकार कर ले। इसके स्थान पर यह उसे ऐसा बनाता है कि जिनकी वह अगुवाई करता है उनसे उत्तम की अपेक्षा कर सके। सफ़ल अगुवा अन्य लोगों को चुनौती देता है कि जो काम उन्होंने हाथ में लिया है उस काम के लिए वे पूरे मन से स्वयं को दे दें।

मसीह अपने चेलों से बड़ी अपेक्षाएँ रखता है। वह हमसे चाहता है कि हम उसके राज्य को पहले स्थान पर रखें (मत्ती 6:33), स्वयं का इनकार करें (मत्ती 16:24-26) और उसके लिए सब कुछ छोड़ देने लिए तैयार रहें (लूका 14:26)। उसने मसीही लोगों को इसलिए भी बुलाया है कि वे उसके लिए मरने के लिए भी तैयार रहें (प्रका. 2:10)। मसीह के लिए आधे हृदय का चेलापन कोई विकल्प नहीं है। यूहन्ना ने इसे स्पष्ट रूप में रखा: ढीली मसीहियत मसीह को इतनी बुरी लगती है कि उसे ऐसा लगता है कि वह इसे उगल दे (प्रका. 3:15, 16)!

नहेम्याह ने अपनी उच्च अपेक्षाओं के अनुसार जीवन जीने के लिए लोगों को चुनौती देने के द्वारा प्रभावी अगुवाई का आदर्श प्रस्तुत किया। यरूशलेम की शहरपनाह का पुनः निर्माण करने के लिए लोगों को बुलाने के द्वारा उसने आरम्भ किया (2:17)। जब उसने जाना कि कुछ धनवान लोग अपने दरिद्र भाइयों का शोषण कर रहे हैं तब उसने उनसे बलपूर्वक आग्रह किया कि वे अपना अधर्मी व्यवहार छोड़ दें (5:1-14)। उसने एज्रा को नियुक्त किया कि वह लोगों के लिए व्यवस्था को पढ़े जिससे वे बीते समय की अपनी असफलताओं को देख सकें और भविष्य में कुछ अच्छा करने का दृढ़ निश्चय कर सकें। तब एज्रा ने यहूदियों को चुनौती दी कि वे परमेश्वर के साथ अपनी वाचा बनाए रखने के लिए अपने समर्पण को फिर से नया करें (8:1-10:39)।

नहेम्याह ने यहूदियों से अपेक्षा की कि वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए अपनी प्रतिज्ञा में बने रहें। शूशन की यात्रा के बाद जब वह वापस लौटा तब उसने पाया कि वे अपने वायदों में बने नहीं रहे तब उसने उन्हें इसके लिए ज़िम्मेदार ठहराया। अध्याय 13 में उसने उन्हें चिताया कि वे पश्चात्ताप करें और अपने चलन में परिवर्तन लाएँ। अधिपति के रूप में अपने पद का प्रयोग करते हुए उसने उनसे यह माँग रखी कि वे उसी प्रकार करें जैसा परमेश्वर ने आज्ञा दी। उस परिस्थिति में, अपनी ओर से वे सबसे अच्छा कर सकें इसके लिए उन्हें चुनौती देने के लिए उसकी ओर से यह आवश्यक था कि वह उन्हें अनुशासित करे जिससे वे व्यवस्था का पालन करने में असफल नहीं हों।

क्या प्रभावी अगुवाई का यह गुण कलीसिया के अगुवों के लिए लागू किया जा

सकता है? प्रायः हम इस प्रकार बर्ताव करते हैं जैसे यह नहीं हो सकता। जब मण्डली में लोग बने रहते हैं तो हम प्रसन्न दिखाई देना चाहते हैं जिसमें हम उन्हें अधिक सुसमाचार प्रचारवादी अथवा मिशन मन रखने वाले बनने के लिए उन्हें कभी चुनौती नहीं देते। हो सकता है कि प्रचारक स्वयं के द्वारा तैयार किए आधे अधूरे सन्देशों को बाँट कर सन्तुष्ट हो जाएँ, हो सकता है कि शिक्षकों ने जब अपनी कक्षा के सम्मुख समय बिता लिया तो वे सोच लें कि उनका काम पूरा हो गया है, जब तक प्राचीनों के बिलों का भुगतान होता रहे तब तक वे अपनी भेड़ों के बारे में चिन्ता न करें कि उनकी भेड़ें कहाँ पर हैं और हो सकता है कि अध्यक्ष कुछ भी नहीं कर रहे हों! अनेक मसीही ऐसा मानते हुए दिखाई देते हैं कि अगर वे रविवार के दिन आराधना सभाओं में जाते हैं और कभी कभी अपना कुछ धन दान करते हैं तो प्रभु उनसे जो कुछ चाहता है वह उन्होंने पूरा कर दिया है!

इस प्रकार का चित्र प्रस्तुत करने से भी बढ़कर कलीसिया को उत्तम बनने की आवश्यकता है! वास्तव में यह अच्छा होगा कि अगुवे लोगों को चुनौती दें कि वे अच्छे बनें और अच्छा करें! कलीसिया को ऐसे अगुवों - अर्थात प्राचीनों, अध्यक्षों, प्रचारकों और शिक्षकों - की आवश्यकता है जो परमेश्वर के लोगों से उनकी उच्च अपेक्षाओं के अनुसार प्रेम कर सकें। ये अपेक्षाएँ मसीह की उन माँगों पर आधारित हों जो उसने उन लोगों पर रखी जो उसके पीछे चलने के लिए उसकी बुलाहट का उत्तर देना चाहते हैं। जब अगुवा उन अपेक्षाओं को कलीसिया के सम्मुख थामे रहता है तब उसे चाहिए कि वह सदस्यों को चुनौती दे कि वे मसीह की बुलाहट के अनुसार जीएँ! तब उन चुनौतियों को पूरा करने के लिए उसे भाइयों की सहायता करने के तरीकों की खोज करने का प्रयास करना चाहिए और ऐसा करने के लिए वह उन्हें ज़िम्मेदार ठहराए।

एक प्रभावी मसीही अगुवा कभी ऐसे काम से सन्तुष्ट नहीं होता जो मात्र स्वीकार्य हो; इसके स्थान पर वह चाहता है कि कलीसिया का प्रत्येक प्रयास सर्वोत्तम रहे। अच्छे प्रचारक उन सन्देशों से कभी सन्तुष्ट नहीं होते जो मात्र "ठीक" होते हैं; वे सामर्थी सन्देशों का प्रचार करना चाहते हैं जो लोगों को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए हिला सकें। धर्मी प्राचीन यह जानते हुए कभी भी सन्तुष्ट नहीं होंगे कि भेड़ों में से कुछ भेड़ें विश्वासयोग्य हों; उनकी देखभाल के अन्तर्गत किसी एक व्यक्ति को भी वे नाश होने से बचाने का प्रयास करेंगे। प्रत्येक मसीही उत्साहित किए जाने चाहिए जिससे वे परमेश्वर की सेवकाई के प्रति पूर्ण रूप से स्वयं को समर्पित कर सकें।

निष्कर्ष। मसीही अगुवों को चाहिए कि वे परमेश्वर के लोगों को चुनौती दें कि वे परमेश्वर की पुस्तक में पाए जाने वाले उच्च स्तर के अनुसार जीने के लिए अपनी ओर से उत्तम प्रयास करें। किसी ने कहा है, "जब मसीह किसी व्यक्ति को बुलाता है तो वह उन्हें निमन्त्रण देता है कि वह आए और मरे।" प्रत्येक मसीही अपने विश्वास के लिए मरने के लिए नहीं बुलाया जाता परन्तु प्रत्येक मसीही को उत्साहित किया जाना चाहिए कि वह अपने जीवन का प्रत्येक दिन मसीह के लिए जीए। मसीह अपनी कलीसिया के लिए उच्च अपेक्षाएँ रखता है और हमें इसके

सदस्यों की सहायता करनी चाहिए कि वे उन अपेक्षाओं के अनुसार जी सकें।

परमेश्वर किसके समान लगता है? (अध्याय 9)

नहेम्याह 9 में परमेश्वर का जो चित्र प्रस्तुत किया गया वह प्रभावशाली है। परमेश्वर किसके समान लगता है? (1) वही एकमात्र प्रभु है; वह एकमात्र परमेश्वर है (9:6)। (2) वह सब चीज़ों का सृष्टिकर्ता है (9:6)। (3) वह ऐसा परमेश्वर है जो मनुष्य के साथ वाचा बाँधता है और अपनी वाचाओं को पूरा करता है (9:8, 32, 33), जो अपने वायदों के अनुसार कार्य करता है। (4) वह ऐसा परमेश्वर है जो अपने शत्रुओं को नष्ट कर डालता है (9:10, 11) और अपने लोगों को दण्ड देता है जब वे उसके विरुद्ध बलवा करते हैं (9:27, 28, 30)। (5) वह ऐसा परमेश्वर है जो लोगों से बात करता है, उन्हें अच्छे नियम प्रदान करता है (9:13, 14), अपने आत्मा के द्वारा उन्हें निर्देश देता है (9:20)। उसने नबियों के द्वारा उनसे बात की (9:26, 30) और उन्हें चिताया (9:34)। (6) वह क्षमा करनेवाला अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करनेवाला, और अति करुणामय परमेश्वर है (9:17, 19, 27, 31, 32); वह अपने लोगों को क्षमा ही नहीं करता परन्तु उन्हें छुड़ाता भी है (9:27, 28)। (7) वह ऐसा परमेश्वर है जो अपने लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करता है (9:20, 21)। (8) वह भला परमेश्वर है जो "बड़ी भलाई" प्रकट करता है (9:25, 35)। (9) वह महान् पराक्रमी और भययोग्य परमेश्वर है (9:32)। (10) वह धर्मी परमेश्वर है जो अपने लोगों के साथ सच्चाई से काम करता है; जो लोग दण्डित किए गए वे उस ताड़ना के अधिकारी हैं (9:33)।

परमेश्वर की भली व्यवस्था (9:13)

वर्तमान के अति धार्मिक लोगों को वाक्यांश "भली व्यवस्था" एक आत्म विरोधी, एक विरोधाभासी लगता है। हम व्यवस्था के द्वारा नहीं बचाए जा सकते परन्तु हमें यह अनुमान नहीं लगाना चाहिए कि व्यवस्था स्वयं बुरी है। नया नियम और पुराना नियम दोनों सिखाते हैं कि व्यवस्था भली है। नहेम्याह 9 में मूसा की व्यवस्था को ऐसा संयोजन बताया गया है जिसमें, "*सीधे* नियम," "*सच्ची* व्यवस्था," और "*अच्छी* विधियाँ, और आज्ञाएँ" (9:13; प्रभाव जोड़े गए है) हैं। इन आज्ञाओं, विधियों और नियमों पर दिया गया विशेष ध्यान किसी भी व्यक्ति को बाध्य करेगा कि मूसा की व्यवस्था परमेश्वर की ओर से इस्राएल के लिए एक भला और अनुग्रहकारी दान था। नया नियम यह नहीं सिखाता कि मूसा की व्यवस्था बुरी थी परन्तु इसने उद्धार का कोई योग्य माध्यम उपलब्ध नहीं करवाया। उद्धार मसीह से है न कि पुराने नियम के नियमों से है जबकि उन्हें "सीधे," "सच्ची," और "अच्छी," कहा जा सकता है।

समाप्ति नोट्स

[1]"टाट" बकरी या ऊँट के बालों से बनाया जाता था और प्रायश्चित और शोक के समय में नंगी कमर को ढकने के लिए काम में लिया जाता था (उत्पत्ति 37:34; 2 शमूएल 3:31; 1 राजा 21:27; एस्तेर 4:1-4; दानिय्येल 9:3). (में *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 4, *1 राजा-अय्यूब*, एडिटर फ़्रेंक ई. गेबलाइन [ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1988], 729 एड्विन एम. यमौची, "एज्रा-नहेम्याह") इस सामग्री की शारीरिक असुविधा के पीछे की मनसा यह थी कि एक व्यक्ति की संवेदनात्मक पीड़ा का प्रत्युत्तर दिया जा सके। किसी के सिर पर "धूल" अथवा "मिट्टी" (NIV) डालना गहरे दुख को भी बताता था (यहोशू 7:6; 1 शमूएल 4:12; 2 शमूएल 1:2; अय्यूब 2:12)। यह सम्भावित रूप से मानव जीवन की कमज़ोरी प्रकट करता था (देखें उत्पत्ति 3:19; भजन 103:14) अथवा कोई व्यक्ति स्वयं को ऐसा समझता था जैसे कि वह "मर गया हो और उसे गाड़ दिया गया हो." (डी. जे. ए. क्लाइन्स, *एज़्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, द न्यु सेन्चुरी बाइबल कमेन्ट्री [ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1984], 190)। [2]में *अ कमेन्ट्री ओन द बाइबल*, एडिटर आर्थर एस. पीक (न्यु योर्क: थोमस नेल्सन & सन्स, 1920), 333 डब्ल्यु. ओ. ई. इस्टरली, "एज्रा-नहेम्याह।" [3]यमौची, 729. [4]इब्रानी पाठ्य में यह पद अक्षरशः "इस्राएल का बीज [זֶרַע, *ज़ेरा*]" है; इसी प्रकार, 9:8 में "तेरे वंश" अक्षरशः "तेरी सन्तान" है। [5]हालांकि एज्रा और नहेम्याह व्यक्तिगत रूप से दोषी नहीं थे फ़िर भी उन्होंने "यहूदा के पाप के दोष में स्वयं को भी शामिल किया और अपनी जाति को पश्चात्ताप करने और सुधार के लिए अगुवाई दी" (मेरी फ़्रान्सिस ओवेन्स, *एज़्रा, नहेम्याह, एस्तेर, अय्यूब*, लेमैन्स बाइबल बुक कमेन्ट्री, वोल. 7 [नैशविल्ल: ब्रोडमैन प्रेस, 1983], 56-57)। [6]कीथ एन. स्कोविल, *एज़्रा-नहेम्याह*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेन्ट्री (जोप्लिन, मिसौरी : कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 2001), 223. [7]एच. जी. एम. विलियमसन, *एज़्रा, नहेम्याह*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 16 (वाको, टेक्सास: वर्ड बुक्स, 1985), 306. [8]जेकब एम. मेयर्स, ने अपने विश्लेषण में लिखा, "प्रार्थना का यह भजन, उस जाति के समान रूप से निरन्तर स्वः धर्म त्याग के बाद भी अपनी वाचा के प्रति परमेश्वर की निरन्तर विश्वासयोग्यता का एक अद्भुत प्रकटीकरण है" (जेकब एम. मेयर्स, *एज़्रा, नहेम्याह*, द ऐंकर बाइबल, वोल. 14 [गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे & कं., 1965], 167)। [9]पंचग्रन्थ में जातियों की सूची इसी समान सन्दर्भों में पायी गई सूचियों के समान है जबकि यह उनमें से किसी भी एक की हूबहू नकल नहीं करती। [10]प्रार्थना एक विशेष भाव के साथ यह नहीं बताती कि समय की एक अवधि के लिए यहूदियों को देश से दूर ले जाया गया परन्तु वाक्यांश "तू ने उन्हें देश देश के लोगों के हाथ में कर दिया" (9:30) संकेत देता है कि वे गुलामी में ले जाए गए।

[11]ये आयतें, अध्याय 8 की आयतों के समान इस वास्तविकता पर बल देती हैं कि परमेश्वर ने मूसा के द्वारा व्यवस्था दी। [12]सब्त से सम्बन्धित विधियाँ निर्गमन की पुस्तक में (निर्गमन 16:22-30; 20:8-11; 23:12; 31:12-17; 35:1-3) साथ ही पंचग्रन्थ में अनेक अन्य स्थानों में बार बार देखने को मिलती हैं (लैव्य. 19:3, 30; 23:3; 26:2; व्यव. 5:12-15). [13]एफ़. चार्ल्स फ़ेन्शम, *द बुक्स ऑफ़ एज़्रा एन्ड नहेम्याह*, द न्यु इन्टरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेन्ट (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 225, 231. [14]गिनती 14:4 कहती है कि उन्होंने एक अगुवा नियुक्त करने का सुझाव दिया परन्तु यह संकेत नहीं देती कि उन्होंने वास्तव में ऐसा किया या नहीं। स्कोविल ने यह कहते हुए आयत 17 को गिनती 14:4 के साथ मिलाया कि बलवा करने के इस प्रकार के कार्य की योजना बनाने में वे उसी प्रकार दोषी थे मानो उन्होंने उस योजना के अनुसार कार्य किया हो (देखें मत्ती 5:27, 28)। (स्कोविल, 227.) [15]अनुवाद "मिस्र में," LXX और कुछ इब्रानी हस्तलिपियों (בְּמִצְרַיִם, *बीᵉमित्स्रयिम*) के अनुसार चलता है। MT में "अपने विद्रोह में" (בְּמִרְיָם, *बीᵉमिर्यम*) है। दो इब्रानी पठनों के बीच का अन्तर एक व्यंजन (צ, *त्स*) है। [16]लेस्ली सी. एलन एन्ड तिमोथी एस. लानियाक, *एज़्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, न्यु इन्टरनेशनल बिब्लिकल कमेन्ट्री (पीबॉडी, मेसाच्युसेट्स: हेन्ड्रिकसन पब्लिशर्स, 2003), 136. [17]यमौची, 736. [18]राल्फ़ डब्ल्यु. क्लेन, "द बुक्स ऑफ़ एज्रा & नहेम्याह," इन *द न्यु इन्टरप्रिटर्स बाइबल*, एडिटर

लिएन्डर ई. केक (नैशविल्ल: एबिंगडन प्रेस, 1999), 3:812. [19]NASB आयत 32 में इब्रानी के इसी शब्द का अनुवाद "सरदारों" और आयत 34 में "अगुवों" के रूप में करती है। [20]देखें 1 राजा. 15:26, 30, 34; 16:13, 26; 21:22; 2 राजा. 3:3; 10:29, 31; 13:2, 6, 11; 14:24; 15:9, 18, 24, 28; 23:15.

[21]ऐसा क्यों नहीं हुआ? जब इस्राएल बार बार और बहुत दुष्टता के साथ परमेश्वर के विरुद्ध चला तब भी परमेश्वर ने उन्हें पूरी तरह नष्ट क्यों नहीं किया? वे त्याग दिए जाने के अधिकारी थे! अगर परमेश्वर उन्हें छोड़ देने और जंगल में नष्ट होने के लिए दे दिए जाने का चुनाव करता तो वाचा की शर्तों के अनुसार परमेश्वर पूरी तरह न्यायसंगत ठहराया जाता। उसने ऐसा नहीं किया उसका कारण मात्र यह है कि परमेश्वर ने इस्राएल को बुलाया जिससे वह अब्राहम के वंश के द्वारा सम्पूर्ण मानवजाति को आशीष देने के अपने वायदे को पूरा करने का माध्यम बने। परमेश्वर ने यहूदियों के द्वारा इस संसार में एक उद्धारकर्ता मसीहा को लाने का मन रखा; और उनकी अविश्वासयोग्यता भी उसे ऐसा करने से रोक नहीं सकती। [22]पुराने नियम में किसी अन्य स्थान पर और प्राचीन निकट पूर्व में पायी जाने वाली वाचा के सूत्र के साथ नहेम्याह 9 और 10 के एक मिलान के लिए देखें यमौची, 736, जो, के. बोलत्ज़र, *द कवनेन्ट फ़ोर्मूलरी*, रिवाइज्ड एडिशन (फ़िलाडेल्फ़िया: फ़ोर्टरेस, 1971), 43-47 का प्रमाण देता है। "द कवनेन्ट," पर एक विचार विमर्श के लिए देखें कोय डी. रोपर, *निर्गमन*, ट्रुथ फ़ोर टुडे कमेन्ट्री (सर्सी, आर्कन्सास: रिसोर्स पब्लिकेश्नस, 2008), 679-83.